मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- स्टूडेंट यूनियन के बदलते आयाम
- जेएनयू में छात्र संघ की जीत के मायने — 3

- गौरी लंकेश की हत्या-आजाद सोच की हत्या
- अब भाजपा को सोशल मीडिया से लगने लगा है डर — 4

- किसानों को कर्जमाफी के नाम पर बेइज्जत कर रही योगी सरकार — 5

- जजों व अन्य अधिकारियों को जेलर के 'आतिथ्य' से बचना चाहिये — 8

वर्ष 30 | अंक 21 | फरीदाबाद | 16-30 सितम्बर 2017 | फोन : - 9999595632 | ₹ 2

राजनीतिक बेशर्मी की इन्तहा

हत्यारे बलात्कारी बाबा से समर्थन लेती रहेगी खट्टर सरकार

बलात्कार के दो मामलों में सज़ा पा चुके और हत्या के मामलों में सज़ा करीब गुरमीत राम रहीम बेशक जेल में एड़ियां रगड़ रहा है, लेकिन खट्टर की हरियाणा सरकार है कि अभी भी इस पाखंडी बाबा का पल्लू छोड़ने को तैयार नहीं। उसकी नज़र अब भी, ध्वस्त हो चुके उसके वोट बैंक पर लगी है।

मज़दूर मोर्चा, चंडीगढ ब्यूरो

खट्टर सराकार के मुखर प्रवक्ता एवं बाबा के परम भक्तों में से एक राज्य के स्वास्थ्य मन्त्री अनिल विज ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए स्पष्ट किया कि एक व्यक्ति यानी बाबा राम-रहीम अगर दोषी है तो क्या सारा डेरा ही दोषी हो गया? क्या सारे अनुयायी दोषी हो गये? खुद ही जवाब देते हुए कहा कि सभी डेरा प्रेमी भले लोग हैं, वे उनका समर्थन लेते रहेंगे और डेरे को भी बरकरार रखेंगे।

मजेदार बात तो यह है कि इतनी बेशर्मी से यह बयान विज तब कर रहे हैं जब जघन्य अपराधी बाबे के डेरे की तलाशी चल रही है और एक के बाद एक जघन्य अपराधों की लिस्ट लम्बी होती जा रही है।

वह ज़िन्दा देहों का तो शोषण करता ही था, उन्हें मार कर मानव देहों की सप्लाई भी निजी मेडिकल कॉलेजों को करता था। मृत शरीरों की आवश्यकता प्रत्येक मेडिकल कॉलेज को रहती है। डेरे के निकटतम स्थित अग्रोहा मेडिकाल कॉलेज, रोहतक मेडिकल कॉलेज व राज्य के अन्य मेडिकल कॉलेजों को देह दान करने की बजाय यह पाखंडी राम लखनऊ तक के प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों को देह बेचता था। जाहिर है राज्य के तमाम सरकारी मेडिकल कॉलेज तो उसे कुछ देने वाले थे नहीं, यदि देते भी तो बाकायदा चेक से पेमेंट करते जबकि प्राइवेट वाले दो नम्बर में नकद पेमेंट कर सकते हैं।

हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विजं

जो आदमी मानव देह बेच सकता है तो वह मानव अंग बेचने से परहेज क्यों करेगा? यदि वह इस तरह का जघन्य व्यापार नहीं कर रहा था तो उसे इस धंधे को छिपा कर करने की क्या जरूरत थी? क्यों नहीं उसने नियमानुसार राज्य सरकार एवं इसके सम्बन्धित विभागों से स्वीकृति एवं लाईसेंस आदि प्राप्त किये? आज यदि हाई कोर्ट के आदेश पर डेरे की तलाशी न हुई होती और वह भी सीधे-सीधे हाई कोर्ट की निगरानी में तो इस जघन्य अपराधी के ये भाजपाई भक्त तो कभी इस राज़ से पर्दा उठने ही न देते। तलाशी का जो काम आज हाई कोर्ट करा रही है, वह तो बहुत पहले सरकार को स्वत: करना चाहिये था। इतनी देरी से हुई इस तलाशी का लाभ उठा कर बाबा के चेलों ने बहुत से अहम सबूत नष्ट कर दिये होंगे।

खट्टर सरकार एक बड़ी भारी गलतफ़हमी यह भी पाले बैठी थी कि बाबा अपने 300 बिस्तरों वाले अस्पताल को शीघ्र ही मेडिकल कॉलेज बना देगा, एसे खट्टर के हर ज़िले में एक मेडिकल कॉलेज बनाने के जुमले में कुछ जान पड़ जायेगी। लेकिन गुरमीत राम इतना बेवकूफ़ नहीं था जो मेडिकल कॉलेज बना कर एमसीआई (मेडिकल काऊंसिल ऑफ़ इन्डिया) व सरकार को अपने सिर पर बैठा लेता। छात्रों के दाखिले से लेकर फ़ेकल्टी की नियुक्तियों तक में सरकार की दखलंदाज़ी बाबा भला क्यों सहने लगा। इसके अलावा मेडिकल कॉलेज से कमाई कम और खर्चा कहीं ज्यादा होता है। हां, वह अपने अस्पताल को सुपर स्पेशलिटी का दर्जा देने की राह में जरूर अग्रसर था। जिससे लूट कमाई में और वृद्धि हो सके। जिससक लूट कमाई में और वृद्धि हो सके जानकारों के मुताबिक डॉक्टर वर्ग में बाबा ने अपनी अच्छी खासी पैंठ बनाई हुई है जो कि इस धंधे के लिये बहुत जरूरी है।

उक्त घोटाले के अलावा गोला-बारूद व अवैध एवं प्रतिबंधित हथियारों का भी डेरे में अच्छा-खासा जखीरा पाया गया है। बारूद का कोई भी काम करने के लिये सरकार की अनुमति एवं लाइसेंस लेने के साथ-साथ अधिकारियों द्वारा नियमित निरीक्षण करना भी जरूरी होता है। लेकिन धर्म एवं वोट बैंक की आड़ में बाबा सब नियम कानूनों से ऊपर चल रहा था। यहां तक कि एक से एक कीमती गाड़ियां (कुछ विदेशी भी) तक बिना पंजीकरण के इस डेरे से बरामद हो रही हैं। तरह-तरह के प्रतिबंधित वन्य-प्राणी भी बरामद हुए हैं।

सैंकड़ों करोड़ का व्यवसाय करने वाले इस बाबे पर न तो कोई सेल टैक्स था और न ही कोई इनकम टैक्स। बेतहाशा जायदाद पर जायदाद बनाये जा रहा था और कोई पूछने वाला नहीं। इस सबके बावजूद खट्टर सरकार कहती है कि डेरा तो यूं ही कायम रहेगा और उसके वोट बैंक का इस्तेमाल वे यूं ही करते रहेंगे। दरअसल ऐसे डेरों व ऐसे समर्थकों के सहारे ही जनविरोधी खटारा सरकारें चल पाती हैं।

भाजपा द्वारा लाये गये 'अच्छे दिनों' का भुगतान जनता आगामी चुनावों में करेगी

मज़दूर मोर्चा फ़रीदाबाद ब्यूरो- भाजपा का चुनाव पूर्व नारा था भाजपा लायेंगे अच्छे दिन आयेंगे। आ गई भाजपा और आ गये अच्छे दिन। अवैध शराब तस्करी, निरंतर बढ़ता अपराध बेखौफ़ होकर सट्टे का चलता करोबार। थाने-चौकियों में दलालों का बढता मकड़जाल, अवैध खनन माफ़िया, भूजल माफ़िया, सड़कों के गड्ढों में गिरते-पड़ते लोग, अरावली को काट-काट कर बेचते भू माफ़िया। दिन- दिहाड़े अपराधी अपराध को जाम देकर पुलिस के मुंह पर कालिख पोत रहे हैं।

प्रति दिन शहर में लूटपाट, डकैती, मर्डर, छीना-झपटी, महिलाओं पर बढ़ते अपराध, अपराधी बदमाश नंगे होकर खुले नाच रहे हैं व अपराध कर छुट्टे घूम रहे हैं। क्षेत्र की विधायक सीमा त्रिखा के नाम पर तनेंद्र टंडन जैसे दलाल थाने-चौकियों में कब्जा जमाए हुए है। अभी सप्ताह भर पहले भी टंडन एक पत्रकार के फ़ैसले में थाना एनआईटी पहुंचा जहां ए एस आई कैलाश उसकी पूरी चमचागिरी करता नज़र आया।

टंडन क्षेत्र की विधायक सीमा त्रिखा का नाम लेकर शिकायतकर्ता पत्रकार पर फ़ैसले का दबाव बनाने लगा। जिसको लेकर पत्रकार ने तुरंत विधायक सीमा त्रिखा को फ़ोन पर कहा कि अब आपके यही काम रह गये हैं। इस पर सीमा त्रिखा ने अपना पल्ला झाड़ लिया।

यहां पाठकों को बता दें कि जब तक कैलाश जैसी काली भेड़े थाने एनआईटी में वर्षों तक तैनात रहेगी तब तक टंडन जैसे दलालों के हौंसले बुलंद रहेंगे। गतांक में मज़दूर मोर्चा ने टंडन के कर्मकाण्डों का थोड़ा सा विवरण छापा था जिसको लेकर टंडन व उसके चमचों की गले की थूक तक सूख गई थी। वहीं क्षेत्रीय विधायक सीमा त्रिखा ने चुनावों के दौरान जनसभाओं में लम्बी-लम्बी जुमलेबाज़ी हांकी थी कि चुनाव जितते ही कैसिनो संचालकों, सट्टेबाज़ों, जुआरियों, शराब तस्करों, अवैध निर्माण कर्ताओं पर नकेल कसेगी। जबकि ये सारे गोरख धंधे करने वाले 'मौजिज' लोग उनके निवास स्थान पर चाय पीते सबसे ज्यादा देखे जा सकते हैं।

जहां भाजपा के स्मार्ट शहर में गंदगी के ढेर, टूटी-फूटी सड़कें, जलभराव, लचर कानून व ट्रैफ़िक व्यवस्था से रोज़ाना परेशान होने वाले जाम में फ़ंसे लोगों ने भाजपा के बताये अच्छे दिनों का पूरा मज़ा ले लिया है। उस मज़े का भुगतान जनता दो साल बाद आने वाले चुनावों में जरूर करेगी। ये जनता है, सब जानती है।

मंत्री विपुल गोयल ने यात्रियों की बस भर के भेजी शिरडी

जन-समस्यायें हल करना तो वश में है नहीं, तीर्थ यात्रा तो करा ही सकते हैं

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्थानीय विधायक एवं राज्य के उद्योग मन्त्री विपुल गोयल ने गत सप्ताह सांई धाम शिरडी की यात्रा हेतु एक बस भरके सेक्टर 16 स्थित अपने कार्यालय से रवाना की। इस रवानगी को इतनी धूम-धाम से मीडिया द्वारा प्रचारित कराया गया जैसे शहर की जनता को कोई बहुत बड़ा तोहफ़ा दिया गया हो अथवा जनता की कोई बड़ी समस्या हल कर दी गयी हो।

इससे कुछ ही दिन पूर्व मन्त्री जी ने अपने सेक्टर 17 स्थित घर पर गणेश पूजा का एक भव्य कार्यक्रम भी कई दिनों तक चलाया था। पूजा के दौरान चले लंगर में लजीज व्यंजन हर आने वाले को परोसे गये। यूं तो लंगर सब आने जाने वालों के लिये खुला था, परन्तु पत्रकारों, अधिकारियों व अन्य वीआईपी लोगों के लिये भव्य व्यवस्था अलग से थी। जहां खाना-पीना बढिया हो और 'भगवान' की पूजा में शामिल होने का पुण्य मुफ़्त में मिलता हो तो वहां दिन भर (हफ़्ते तक) लोगों का तांता लगा ही रहना था, सो लगा रहा।

विधायक बनने के बाद शीघ्र विपुल जी ने शहर के टाऊन पार्क में एक बहुत ही ऊंचा तिरंगा झंडा खड़ा करके अपना नाम काफ़ी 'ऊंचा' किया था। झंडा गाड़ने का यह काम भी बाकायदा एक उत्सव की तरह पूरी धूम-धाम से हुआ था। स्कूलों से घेर-घोट कर बच्चे लाये गये थे। इलाके के तमाम छोटे-बड़े भाजपाई नेताओं का जमावड़ा लगाया गया था। मुख्यमंत्री खट्टर को भी और तो कोई काम-धाम करने को था नहीं, सो वे भी इस जमावड़े की शोभा में चार चांद लगाने आ पहुंचे थे। बताते हैं कि झंडा गाड़ने की प्रेरणा विपुल ने हिसार के पूर्व सांसद नवीन जिंदल से ली थी। जिंदल ने राजनीति में उतरने के लिये ऊंचे-ऊंचे झंडे गाड़ने का रास्ता चुना था। सांसद बनते ही उसने फ़िर जो लूट मचाई उसके मुकदमे अभी तक चल रहे हैं।

झंडे की राजनीति से आगे बढ़ते विपुल गोयल ने अब 'भगवान' का पल्लू भी पूरे ज़ोर से पकड़ लिया है। यही सरल भी है। कुछ पैसा ही तो खर्च होता है जिसकी इनके पास कोई कमी नहीं। शहर की जनता जिन कष्टों एवं समस्याओं से जूझ रही है उन्हें हल कर पाने की ओर इनका न तो कोई ध्यान है और न ही इनके वश का है। करीब 2 वर्ष पूर्व इन्होंने शहर को आवारा पशुओं-गायों व कुत्तों-से मुक्त करने की घोषणा की थी। इनसे मुक्त होना तो दूर, दिन ब दिन इनकी संख्या बढती जा रही है। शायद ही कोई दिन जाता होगा जब गायों व सांडों से कोई शहरी दुर्घटनाग्रस्त न हुआ हो। सांडों द्वारा टक्कर मारे जाने से तो कई लोग मारे भी जा चुके हैं।

इसी तरह कुत्तों का भी पूरा आतंक गली मुहल्लों व तमाम पॉश सेक्टरों में भी है। घरों से निकल कर बच्चे अकेले स्कूल जाने से घबराते हैं। और तो और सुबह-सबेरे घरों में अखबार डालने वाले हॉकर भी इन कुत्तों से बहुत घबराते हैं। कई हॉकरों को ये कुत्ते काट भी चुके हैं। इसके चलते अब हॉकर एक डंडा भी अपने साथ लेकर चलने को मजबूर हैं। सरकारी बीके अस्पताल में दर्ज आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2014-15 में 10 हज़ार से अधिक लोग रेबीज़ (कुत्ता काटे) का टीका लगवा गये। 2016 में यह आंकड़ा 12 हज़ार से पार हो गया है। यह तो तब है जब इस सरकारी अस्पताल में आनेवालों को यह कह कर भगा दिया जाता है कि टीके खत्म हो गये हैं। इसी तरह ईएसआई के अस्पतालों में भी रेबीज के टीके इससे भी बड़ी संख्या में लगाये जाते हैं।

जो थोड़े-बहुत भी समर्थ लोग हैं वे सरकारी के चक्कर में न पड़कर सीधे बाज़ार से खरीद कर ये टीके लगवाते हैं। वैसे 100-125 का खर्च तो सरकारी में भी हो ही जाता है और जो दिहाड़ियां टूटती हैं वे अलग से। बाज़ार से लगवाना 1000 से 2500 रुपये तक में पड़ जाता है। खबर लिखते समय भी बीकेअस्पताल में ये टीके उपलब्ध नहीं हैं जो गत डेढ माह से समाप्त हुए पड़े हैं। ग़रीब आदमी ऐसे में कहां जाकर मरेगा? विपुल जी हों या कृष्णपाल जी हों या सीमा त्रिखा हों, इन्हें इस तरह की समस्याओं से क्या लेना-देना? इन्हें तो केवल अपने कमाऊ पूतों के लिये अफ़सरों को धमका कर उल्टे-पुल्टे काम कराने आते हैं और शेष जनता को जुमलेबाज़ी व इधर-उधर के धंधों में उलझाये रखना आता है।

इसके अलावा स्कूलों, खासकर सरकारी स्कूलों की व्यथा भी शोचनीय है। नौबत यहां तक आ गयी है कि स्कूली बच्चे भी अब धरने-प्रदर्शन करने को मजबूर हो गये हैं। मांग भी क्या कि स्कूल में मास्टर नहीं है पढाने को मास्टर लगाओ। अस्पतालों में डॉक्टर नहीं हैं। स्वीकृत संख्या के आधे भी नहीं हैं बीके अस्पताल में। डॉक्टर तो डॉक्टर, नर्सें व अन्य स्टाफ़ भी केवल नाम मात्र ही हैं। इसके बावजूद 'अच्छे दिन' के जुमले दोहराने से हां, पूजा-पाठ हवन यज्ञ देशभक्ति व तीर्थ यात्रा जैसे धंधों में जनता को लगा कर ये नेतागण जनता को कब तब बेवकूफ़ बना पायेंगे, बस यही देखना है।